L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
Sub- Psychology
IA 2nd year (12)
PAPER- Class- 12
TOPIC- intelligence.

Dr. Pramod Kumar Sahu.
Assit. Professor.
Guest Teacher.
V.S.J. College Rajnagar,
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumardbg2018@gmail.com.

व्यक्तियों की पारस्परिक भिन्नता जानने में बुद्धि एक मुख्य निर्मिति है। किसी व्यक्ति की बुद्धि जानने से यह ज्ञात होता है कि वह अपने पर्यावरण के अनुरूप अपने व्यवहार को किस प्रकार अनुकूलित करता है। इस खंड में आप बुद्धि तथा उसके विभिन्न स्वरूपों के बारे में पढ़ेंगे।

सामान्यजन बुद्धि के स्वरूप के बारे में जो समझते हैं, मनोवैज्ञानिकों द्वारा उससे बिल्कुल भिन्न ढंग से इसे समझा जाता है। यदि आप किसी बुद्धिमान व्यक्ति के व्यवहारों का प्रेक्षण करें तो आप पाएँगे कि उसमें मानसिक सतर्कता, हाज़िरजवाबी, शीघ्र सीख लेने की योग्यता और संबंधों को समझ लेने की योग्यता जैसे अनेक गुण होते हैं। ऑक्सफ़ोर्ड शब्दकोश ने बुद्धि को प्रत्यक्षण करने, सीखने, समझने और जानने (knowing) की योग्यता के रूप में परिभाषित किया है। बुद्धि के प्रारंभिक सिद्धांतकारों ने भी इन्हीं गुणों द्वारा बुद्धि को परिभाषित किया था, अल्फ्रेड बिने (Alfred Binet) बुद्धि के विषय पर शोधकार्य करने वाले पहले मनोवैज्ञानिकों में से एक थे। उन्होंने बुद्धि को अच्छा निर्णय लेने की योग्यता, अच्छा बोध करने की योग्यता और अच्छा तर्क प्रस्तुत करने की योग्यता के रूप में परिभाषित किया। वेक्सलर (Wechsler) जिनके द्वारा बनाया गया बुद्धि परीक्षण व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है, ने बुद्धि को उसकी प्रकार्यात्मकता के रूप में समझा अर्थात उन्होंने पर्यावरण के प्रति अनुकूलित होने में बुद्धि के महत्व को महत्व प्रदान किया। वेक्सलर के अनुसार बुद्धि व्यक्ति की वह समग्र क्षमता है। जिसके द्वारा व्यक्ति सविवेक चिंतन करने, सोद्देश्य व्यवहार करने तथा अपने पर्यावरण से प्रभावी रूप से निपटने में समर्थ होता है।

II

कुछ अन्य मनोवैज्ञानिकों, जैसे- गार्डनर (Gardner) और स्टर्नबर्ग (Sternberg) का सुझाव है कि एक बुद्धिमान व्यक्ति न केवल अपने पर्यावरण से अनुकूलन करता है, बल्कि उसमें सक्रियता से परिवर्तन और परिमार्जन भी करता है। आपको बुद्धि की संप्रत्यय और उसका क्रमविकास बुद्धि के कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांतों की विवेचना किए जाने के उपरांत समझ में आ जाएगा,

बुद्धि के सिद्धांत :-

मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि के अनेक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। इन सिद्धांतों को मोटे तौर पर मनोमितिक/संरचनात्मक उपागम अथवा सूचना प्रक्रमण उपागम का प्रतिनिधित्व करने वाले दो संवर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

मनोमितिक उपागम (psychometric approach) में बुद्धि को अनेक प्रकार की योग्यताओं का एक समुच्चय माना जाता है। यह व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले निष्पादन को उसकी संज्ञानात्मक योग्यताओं के एक सूचकांक के रूप में व्यक्त करता है। दूसरी ओर, सूचना प्रक्रमण उपागम में बौद्धिक तर्कणा तथा समस्या समाधान में व्यक्तियों द्वारा उपयोग की जाने वाली प्रक्रियाओं का वर्णन किया जाता है। इस उपागम का प्रमुख केंद्रबिंदु एक बुद्धिमान व्यक्ति द्वारा की जाने वाली विभिन्न क्रियाओं पर होता है। बुद्धि की संरचना तथा उसमें अंतर्निहित विभिन्न विमाओं पर अधिक ध्यान न देकर सूचना प्रक्रमण उपागम बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवहारों में अंतर्निहित संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के अध्ययन पर अधिक बल देता है। अब हम इन दो उपागमों के कुछ प्रतिनिधि सिद्धांतों का वर्णन प्रस्तुत करेंगे। हम पहले बता चुके हैं कि बुद्धि के संप्रत्यय को मानसिक प्रक्रियाओं के रूप में औपचारिक बनाने का प्रयास करने वालों में अल्फ्रेड बिने प्रथम मनोवैज्ञानिक थे। बिने के पहले, बुद्धि के संबंध में व्याख्या वर्णन भिन्न-भिन्न सांस्कृतिक परंपराओं में उपलब्ध अनेक दार्शनिक निबंधों में मिलती है।

बिने द्वारा दिया गया बुद्धि का सिद्धांत बहुत ही सरल प्रकार का है। क्योंकि इस सिद्धांत की उत्पत्ति अधिक बुद्धिमान और कम बुद्धिमान व्यक्तियों की अलग-अलग पहचान करने के प्रयासों के अंतर्गत हुई थी, इसलिए बिने ने बुद्धि को योग्यताओं का एक समुच्चय मानते हुए इसका उपयोग व्यक्ति के परिवेश में स्थित विभिन्न पक्ष अथवा समस्याओं का समाधान करने में किया जा सकता है। इनके सिद्धांत बुद्धि के एक-कारक सिद्धांत (One factor theory) के रूप में जाना जाता है। जिन मनोवैज्ञानिकों ने बिने द्वारा निर्मित किए गए बुद्धि परीक्षणों द्वारा व्यक्तियों से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण करना प्रारंभ किया तो यह सिद्धांत विवादग्रस्त हो गया।

1927 में चार्ल्स स्पीयरमैन ने बुद्धि का द्वि-कारक सिद्धांत (Two-factor theory) प्रस्तावित किया। यह सिद्धांत कारक विश्लेषण की सांख्यिकीय विधि पर आधारित था। उन्होंने प्रदर्शित किया कि बुद्धि के अंतर्गत एक सामान्य कारक (जी-कारक) (g-factor) तथा कुछ विशिष्ट कारक (एस कारक) (s-factors) होते हैं। जी-कारक के अंतर्गत वे सभी मानसिक प्रक्रियाएँ होती हैं, जो प्राथमिक हैं, और जिनका प्रभाव सभी प्रकार के कार्यों के निष्पादन पर पड़ता है। उन्होंने बताया कि प्रत्येक व्यक्ति में जी-कारक के साथ-साथ कुछ विशिष्ट योग्यताएँ भी होती हैं। इन विशिष्ट योग्यताओं को उन्होंने एस-कारक कहा। श्रेष्ठ गायक, वास्तुकार, वैज्ञानिक तथा खिलाड़ी आदि जी-कारक में उच्च स्तर के हो सकते हैं। परंतु इनमें विशिष्ट क्षेत्रों से संबंधित विशिष्ट योग्यताएँ भी होती हैं। जिनके कारण वे अपने-अपने क्षेत्र में श्रेष्ठ हो जाते हैं। स्पीयरमैन के सिद्धांत के बाद लुईस थर्स्टन ने प्राथमिक मानसिक योग्यताओं का सिद्धांत प्रस्तुत किया। इसमें कहा गया कि बुद्धि के अंतर्गत सात प्राथमिक मानसिक योग्यताएँ होती हैं। जो एक दूसरे से अपेक्षाकृत स्वतंत्र होकर कार्य करती हैं। ये योग्यताएँ हैं।

Scanned with CamScanner

वाचिक बोध (शब्दों, संप्रत्ययों तथा विचारों के अर्थ को समझना) संख्यात्मक योग्यताएं संख्यात्मक तथा अभिकलनात्मक कार्यों को अति एवं परिशुद्धता से करने का कौशल, दैशिक संबंध (प्रतिरूपों तथा रचनाओं का मानस-प्रत्यक्षीकरण कर लेना। प्रात्यक्षिक गति (विस्तृत प्रत्यक्षीकरण करने की गति) शब्द प्रवाह (शब्दों का प्रवाह तथा नमनीयता के साथ उपयोग कर लेना, स्मृति (सूचनाओं के पुनः स्मरण में परिशुद्धता तथा आगमनात्मक तर्कना (दिए गए तथ्यों से सामान्य नियमों को अनुत्पन्न करना।

विचार-वस्तु का संबंध उस सामग्री या सूचना के स्वरूप से होता है। जिस पर व्यक्ति की बौद्धिक क्रियाएं सम्पन्न होती हैं। उत्पाद का अर्थ उस स्वरूप से होता है। जिसमें व्यक्ति सूचनाओं को संसाधित करता है। उत्पादों को इकाई, वर्ग, संबंध, व्यवस्था, रूपांतरण तथा निहितार्थ में वर्गीकृत किया जाता है। (गिलफोर्ड 1988) में 6x5x6 वर्ग बनते हैं त्रिविमीय रूप मॉडल में 180 प्रकोष्ठ होते हैं प्रत्येक प्रकोष्ठ में योग्यता के कम से कम एक कारक के सम्बद्ध होने की सम्भावना का होना है। कुछ प्रकोष्ठों में एक से अधिक कारक भी हो सकते हैं। प्रत्येक कारक को वर्णित तीनों विमाओं के नाम किया जाता है।

Dr. Pramod Kumar Sahu
Date- 13/07/2020
Sub- Psychology